



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

परमार्थ साधना का एकमात्र उपाय है योगविद्या : प्रो. हरिशंकर उपाध्याय

वर्धा, दि. 28 जून 2021 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं विश्वविद्यालय के दर्शन एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'योगदर्शन की समव्यवहारी प्रयोजनीयता' विषय योग सप्ताह के संपूर्ति सत्र में बतौर मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आईसीपीआर की कार्यकारिणी के सदस्य तथा दर्शनशास्त्र के अध्येता प्रो. हरिशंकर उपाध्याय ने कहा है कि भारतीय



आस्तिक और नास्तिक दर्शन की परंपरा में योग परमार्थ साधना का एकमात्र उपाय है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, 21 जून से 27 जून तक योग सप्ताह का आयोजन किया गया जिसका संपूर्ति सत्र रविवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

प्रो. उपाध्याय ने योग की अवधारणा और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए अपने सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि योग की मूल अवधारणा अनासक्ति की है। गांधी जी ने अनासक्ति योग को अहिंसा दर्शन माना है। अहिंसा का तात्पर्य आत्मशुद्धि यानि मन और शरीर का निर्विकार होना है। उन्होंने महाभारत और गीता का संदर्भ देते हुए इसे योग से जोड़कर व्याख्यायित किया। जर्मन के सुविख्यात दार्शनिक कांट का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि कांट ने कर्म का निरूपण कर

भावनावश और कृतज्ञतावश किये गये कर्म की चर्चा की परंतु कांट ने इन्हें नैतिक नहीं माना। शुभसंकल्पपूर्वक और पवित्र संकल्प के साथ गये कर्म को उन्होंने योग्य माना। उन्होंने कहा कि कर्म को करते हुए आनंद की अनुभूति आवश्यक है। प्रो. उपाध्याय ने कहा कि योगविद्या की जितनी भी साधनाएं चाहे वह वेदांत, बौद्ध और जैन दर्शन की हो उनका विलय अंत में योगविद्या में ही होता है। योगविद्या हमारी पहचान और अस्मिता है। वर्तमान समय में योग की अंतरराष्ट्रीय पहचान को भी उन्होंने रेखांकित किया।

इस अवसर पर नव नालंदा महाविहार विश्वविद्यालय नालंदा के दर्शनशास्त्र विभाग के प्रो. सुशिम दुबे ने कहा कि योग भारत की विरासत है। संयुक्तराष्ट्र की घोषणा से योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। कोरोना की इस त्रासदी में हम सभी को योग का जागरण करने की आवश्यकता है। सबकी समवेत सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए योग की महत्ता को संपूर्ण विश्वने अनुभव किया है। स्थैर्य और धैर्य का संबल प्राणायाम ने प्रदान किया है। प्रो. दुबे ने कहा कि योग का संदेश न केवल चरित्र के लिए बल्कि मानवता के स्वास्थ्य के लिए भी प्रभावी है। उन्होंने महर्षि पतंजलि द्वारा परिभाषित आसनों एवं प्राणायाम की चर्चा करते हुए योग को प्राणविद्या की संज्ञा दी। भारत के सांस्कृतिक प्रतिमानों में योग-ध्यान की मुद्राएं शांति और सौहार्द का संदेश देती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में और आयुष के माध्यम से चिकित्सा प्रयोग में भी योग को प्राथमिकता एवं व्यापकता प्रदान की है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि चिंतन परंपरा की भारत की आगम एवं निगम परंपराओं में योग का विशिष्ट स्थान है। समग्रता पर योग की चर्चा हो इसे लेकर यह आयोजन महत्वपूर्ण है। पतंजलि का योग सूत्र सामान्यजन के लिए मानक प्रक्रिया है। प्रो. शुक्ल ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के साथ योग का गहरा संबंध है। स्वतंत्रता के महानायक योग पर बल देते थे और गांधी ने तो एक आदर्श जीवन के लिए योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाया था। योग एक विलगाव कर उसे जोड़ने की प्रक्रिया है। भारतीय जीवन पद्धति में योग जीवन का हिस्सा है। योग ज्ञान और विवेक प्राप्ति का प्रभावी साधन है। उन्होंने कहा कि प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान-धारणा भारत की दैनिक जीवन प्रणाली का हिस्सा रही हैं। विश्वविद्यालय के स्तर पर योग को आसन से आगे बढ़कर देखा जाना चाहिए। भारत की कोई भी दार्शनिक परंपरा योग मुक्त नहीं है। प्रो. शुक्ल ने गीता में प्रयुक्त सात्त्विक, राजसिक और तामसिक कर्म की चर्चा करते हुए कहा कि सात्त्विक कर्म मनुष्य की भौतिक बिमारियों के मुक्ति मिल सकती है।

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने दिया। संचालन दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ. जयंत उपाध्याय ने किया। संपूर्ण योग सप्ताह के कार्यक्रमों का विवरण साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार ने किया तथा दर्शन एवं संस्कृति विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में सहभागी हुए।

परमार्थ साधना योगविद्येचा एकमेव उपाय : प्रो. हरिशंकर उपाध्याय

वर्धा, दि. 28 जून 2021 : भारतीय आस्तिक व नास्तिक परंपरेत योगविद्या हा परमार्थ साधनेचा एकमेव उपाय होय असे प्रतिपादन अलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज येथील दर्शनशास्त्र विभागाचे माजी अध्यक्ष व आईसीपीआर कार्यकारिणीचे सदस्य प्रो. हरिशंकर उपाध्याय यांनी केले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नवी दिल्ली व विश्वविद्यालयातील दर्शन व संस्कृती विभागा मार्फत आयोजित 'योगदर्शनाचे समव्यवहारी प्रयोजन' या विषयावर तरंगाधारित योग सप्ताहाच्या समारोपीय सत्रात मुख्य वक्ता म्हणून बोलत होते. आंतरराष्ट्रीय योग दिवस, 21 जून ते 27 जून पर्यंत योग सप्ताहाचे आयोजन करण्यात आले. रविवारी कुलगुरू प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांच्या अध्यक्षेतेखाली योगसप्ताहाचा समारोप झाला.

प्रो. उपाध्याय म्हणाले की योगाची मूळ अवधारणा अनासक्तिची आहे. गांधीजींनी अनासक्ति योगला अहिंसा दर्शन मानले आहे. योगविद्या ही आपली ओळख व अस्मिता आहे. वर्तमान काळात योगाची आंतरराष्ट्रीय पटलावर ओखळ झाली आहे. यावेळी नालंदा महाविहार विश्वविद्यालय नालंदा येथील दर्शनशास्त्र विभागाचे प्रो. सुशिम दुबे म्हणाले की योग भारताचा प्राचीन ठेवा आहे. कोरोना काळात सर्वांना योगाचे जागरण करण्याची आवश्यकता आहे. योगचा संदेश मनुष्याच्या आरोग्यासाठी प्रभावी आहे. त्यांनी महर्षि पतंजली द्वारा परिभाषित आसन व प्राणायामाची चर्चा करतांना योगाला प्राणविद्येची संज्ञा दिली.

कार्यक्रमाची अध्यक्षता करतांना विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल म्हणाले की भारतीय चिंतनात आगम व निगम परंपरेत योगचे विशिष्ट स्थान आहे. भारताच्या स्वातंत्र्य चळवळीशी योगाचा घनिष्ठ संबंध राहिलेला आहे. गांधीजींनी आदर्श जीवन जगण्यासाठी योगाला दिनचर्येचा भाग बनविले होते. प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान-धारणा या विधी भारताच्या दैनिक जीवन प्रणालीचा हिस्सा आहेत. भारताच्या सर्व दार्शनिक परंपरेत योग उपस्थित आहे असेही ते म्हणाले.

यावेळी स्वागत संस्कृती विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी यांनी केले. संचालन दर्शन व संस्कृती विभागाचे अध्यक्ष डॉ. जयंत उपाध्याय यांनी केले तर आभार डॉ. सूर्य प्रकाश पांडे यांनी मानले. योग सप्ताहाचे विवरण साहित्य विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. अवधेश कुमार यांनी सादर केले. कार्यक्रमात अध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने सहभागी झाले.